Self Respect

18-09-2014

- मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप समझाते हैं । यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप परमधाम से आकर हमको पढ़ा रहे हैं । क्या पढ़ा रहे हैं? बाप के साथ आत्मा का योग लगाना सिखलाते हैं जिसको याद की यात्रा कहा जाता है । यह भी बताया है-बाप को याद करते-करते मीठे रूहानी बच्चे तुम पवित्र बन अपने पवित्र शान्तिधाम में पहुँच जाएंगे ।
- बेहद का बाप ही भारत में, इस साधारण तन में आकर तुम बच्चों को समझाते हैं ।

- तुम बच्चे यहाँ आये हो दैवी कैरेक्टर्स बनाने । इन लक्ष्मी-नारायण के कैरेक्टर्स बड़े मीठे थे । भक्ति मार्ग में उन्हों की ही महिमा गाई हुई है ।

- जबकि जानते हो हम ज्ञान सागर रूहानी बाप के बच्चे हैं, अब रूहानी बाप हमको पढ़ाने आते हैं । यह भी जानते हो यह कोई ऑर्डनरी बाप नहीं है । यह है रूहानी बाप, जो हमको पढ़ाने आया है ।

- सन्यासी लोग भी जानते हैं-ज्ञान भक्ति और वैराग्य । परन्तु सन्यासियों का है अपना हद का वैराग्य । वह बेहद का वैराग्य सिखला न सकें ।
- बेहद का बाप बैठ तुमको सारा ज्ञान समझाते हैं । आगे नहीं जानते थे । अभी सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, उनका आदि- मध्य- अन्त और चक्र की आयु कितनी है, सब बतलाते हैं ।
- यह पढ़ाई कोई इस पुरानी दुनिया के लिए नहीं है । तुम्हारी आत्मा धारण कर साथ ले जायेगी । जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ, तुम भी ज्ञान की नदियां हो ।

- तुम जब जीवनमुक्ति में रहते हो तो बाकी सब मुक्ति में चले जाते हैं । अभी तुम बच्चे नॉलेज ले रहे हो, यह बनने के लिए । तुमने ही सबसे जास्ती सुख देखा है फिर सबसे जास्ती दु :ख भी तुमने देखा है । आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले तुम ही फिर धर्म- भ्रष्ट, कर्म- भ्रष्ट हो गये हो । तुम पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे, यह लक्ष्मी-नारायण पवित्र प्रवृत्ति मार्ग के हैं | घरबार छोड़ना यह सन्यासियों का धर्म है ।

- मनुष्य कितने घोर अन्धियारे में हैं । कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं । यह तो तुम जानते हो- गाया भी जाता है विनाशकाले विपरीत बुद्धि विनशयन्ति । अभी तुम्हारी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार प्रीत बुद्धि है ।
- अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।
- वरदान: धारणा स्वरूप द्वारा सेवा करके खुशी का प्रत्यक्षफल प्राप्त करने वाले सच्चे सेवाधारी भव !